(1)

Lectur No:- 45.

Online class.
Date - 17/5/2020
Time - 10: to 10:50 A.M.

TOPIC,

(1) Moral action

Dr. Surita Kumari
Depart- of philosophy
B.A part-II (S.)
A.H.D. College shahpur
patory, Samastipur.

Ans1.→ साधारणतः नैतिक से जो आशय है, उसे नैतिक (Moral) कहा जाता है। इसका विपरीतार्थक शब्द है, अनैतिक (immoral)। वह जो नैतिक दृष्टि से खराब है वही अनैतिक है। वृहत या व्यापक अर्थ में नैतिक का अर्थ है। नैतिक गुण सम्पन्न।

जिन क्रियाओं का नैतिक निर्णय हो सके तथा जिन्हें सत् या असत्, उचित या अनुचित, पाप या पुण्य कहा जा सके, उन्हें नैतिक कर्म (Moral action) कहते हैं।

साधारणतः जिसे हम अनैतिक

P.T.O.

Scanned with CamScanner

कर्म अर्थात स्वभाव कोष कहते हैं वह भी नैतिक कर्म है; क्योंकि नैतिक निर्णय करने पर भी हमने उसे स्वभाव या अनैतिक कहा। P.B. Chatterji के शब्दों मे — "The World 'Moral' means that in which moral quality (rightness or wrongness godness or badness) is present. i.e. what is either or wrong. good or bad.

नैतिक कर्मों को ऐच्छिक कर्म (Voluntary action) भी कहा जाता है। जब कोई आत्म-चेतन पुरुष स्वतन्त्र रूप से संकल्प पर कोई ऐसा कर्म करता हो जिसके साधन और हेतु का उसे पूर्ण ज्ञान हो।

तब उसे क्रिया को ऐच्छिक कर्म कहा जाता है। जब कोई व्यक्ति दबाव (pressure) में

P.T.O.

आकर कर्म करता है तो उसके कर्म को ऐच्छिक कर्म नहीं कहा जा सकता। ऐसा कर्म नीतिशास्त्र

नीतिशास्त्र का विषय नहीं हो सकता केवल ऐच्छिक कर्मों से ही नीतिशास्त्र का सम्बन्ध रहता है। ये ऐच्छिक कर्म उचित या अनुचित शुभ या अशुभ कुछ भी हो सकता है। नैतिक निर्णय के अन्तर्गत सभी ऐच्छिक क्रियाओं का गुण दिखाई ~~देना~~ देता है।

ऐच्छिक (क्रियाओं) क्रियाएं आ जाती हैं। इन सभी कर्मों का नैतिक निर्णय दिया जा सकता है।

ऐच्छिक कर्म के अतिरिक्त मनुष्य के अभ्यासजन्य कर्मों (Habitual action) का भी नैतिक निर्णय हो सकता है। क्योंकि वैसे कर्मों को करने में etc

END